मूल्य: १०.०० रूपया

# तित्थयर

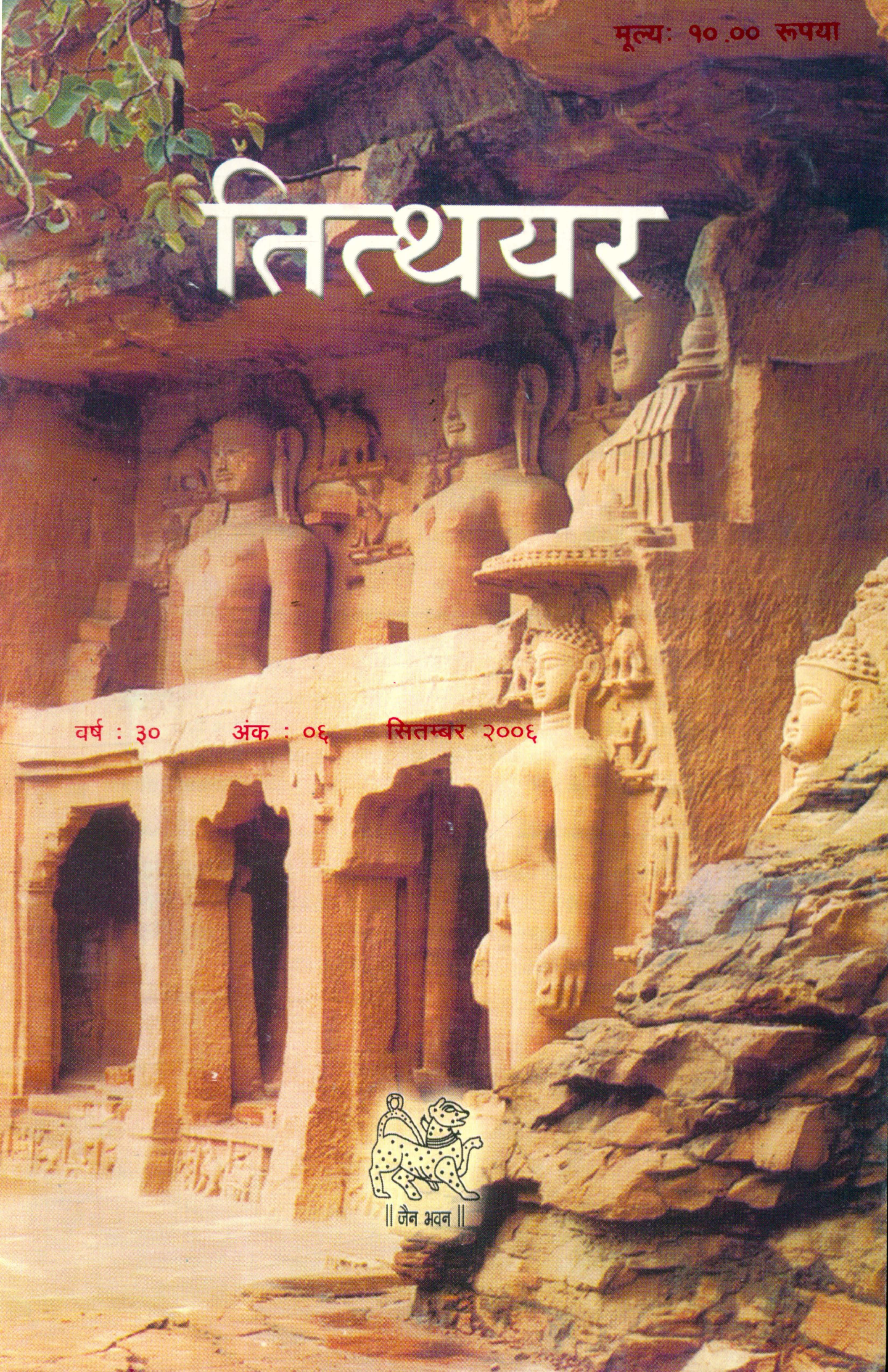

वर्ष : ३० अंक : ०६ सितम्बर २००६

|| जैन भवन ||

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

卐

# Sethia Oil Industries Ltd.

*Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.*

**Plant:**
Post Box No.5
Lucknow Road
Sitapur-2261001 (U.P.)
Ph : 242017/42397/
42073 (05862)
Gram - Sethia- Sitapur
Fax : 242790 (05862)

**Registered Office:**
143, Cotton Street
Kolkata - 700 007
Ph : 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

**Executive Office:**
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph : 22201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 22200248 (033)

# तित्थयर

*श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका*


वर्ष - ३० अंक - ०६, सितम्बर २००६

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 100.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 300.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006


संपादन

डॉ. लता बोथरा,

॥ जैन भवन ॥

# अनुक्रमणिका


| क्र. सं. | लेख | लेखक | पृ. सं. |
|---|---|---|---|
| १. | आचार-आचारंग के सन्दर्भ में | डॉ. लता बोथरा | |
| २. | योगशतक | डॉ. इन्दुकला हीराचन्द झवेरी | |
| ३. | सुवर्णभूमि में कालकाचार्य | डॉ. उमाकान्त शाह | |
| ४. | सिंहल की राजकन्या (**सुदर्शना**) | आचार्यश्री विजयविशालसेनसूरिजी म. सा. | |


**मूल्य - १०.०० रूपये**

**कवरपृष्ठ :** गोपाचल पर्वत (ग्वालियर) में स्थित प्राचीन तीर्थंकर मूर्तियाँ


**Composed by:**

**Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700.007**

# आचारंग में आचार

डॉ. लता बोथरा

भारतीय संस्कृति का मूल केन्द्र आचार है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आचार मुख्य है। आवश्यक निर्युक्ति के अनुसार व्यक्ति बहुश्रुत हो परन्तु आचार रहित हो, उसमें नैतिकता का अभाव हो तो उसका ज्ञान किस काम का। जैसे चन्दन का भार वहन करने वाला गधा केवल भार ही ढोता है उसी प्रकार नैतिकता विहीन ज्ञानी भी शास्त्र के भार का वाहक होता है। इसी लिये आचार ethics को ही प्रथम धर्म माना जाता है। जैन आचार संहिता का प्रतिपादन करने वाले ग्रन्थों में आचारंग प्रथम तथा प्राचीनतम ग्रन्थ माना जाता है। जैन मान्यता है कि जब तक आचार शुद्धि नहीं तब तक चित्त शुद्धि संभव नहीं हो सकती और चित्तशुद्धि के अभाव में आत्मशुद्धि नहीं हो सकती। आत्म शुद्धि के अभाव में मुक्ति की प्राप्ति असम्भव है।

भारतीय नीति दर्शन की मूल भूत धारणाओं जैसे आत्मा की अमरता, पुनर्जन्म का सिद्धान्त, कर्म सिद्धान्त, आत्मा का बन्धन और उसके कारण, बंधन से मुक्ति के उपाय (संवर, निर्जरा) तथा नैतिक जीवन का मुख्य उद्देश्य (मुक्ति) इन सबका जैन दर्शन में व्यापक रूप से विश्लेषण मिलता है। आचार-चारित्र के दर्शन की मूल भित्ति के रूप में स्पष्ट निर्देश हमे आचारांग में सर्वप्रथम प्राप्त होता है।

जिस प्रकार 'अथातो ब्रह्म जिज्ञासा' वेदान्त का मूल सूत्र है वैसे ही 'आत्म जिज्ञासा' आचारांग का मूल सूत्र है। प्रथम सूत्र 'को ऽहं आसी' आत्मा में आस्तित्व सम्बन्धी जिज्ञासा का सूचक है और 'सेऽहं आसी' दार्शनिक चिन्तन के आधारभूत तत्व 'आत्मा' की सत्ता का प्रत्यक्ष बोध कराता है। इस प्रकार जो आत्मा अपने आस्तित्व को जान लेता है 'से आयावाई, लोयावाई, कम्मावाई, किरियावाई]'।।५।। अर्थात् वही आत्मवादी, लोक को जाननेवाला, कर्म का यथार्थ रूप जानने वाला तथा बन्धन के कारण भूत को जानने वाला है।

आचारांग में समता को धर्म कहा गया है– वस्तु का मूल स्वभाव उसका धर्म होता है अतः आत्मा का मूल रूप समता है। अपने मूल स्वरूप में आना ही आत्मा का ध्येय है। यहाँ साधक साध्य, साधना तीनों ही आत्मा से संबंद्ध है। आत्मा के परिभ्रम्मण का मूल कारण कर्म है जब नये कर्मों का आना रूक जाता है और पुराने कर्म क्षय हो जाते है तब आत्मा को नया शरीर धारण नहीं करना पड़ता और वह अक्षय, अनन्त सुख का उपभोक्ता बन जाती है।

णाईयमट्ठं य आगमिस्स अट्ठं णियच्छंत्ति वहागयाउ
विहुयकप्पे एयाणपस्सी, णिज्झो सइत्ता खवए तवस्सी।।११

पूर्वोपाजित कर्मों का क्षय करके जो जीव मोक्ष में चले जाते है वे सिद्ध कहलाते है।

यहाँ प्रश्न यह उठता है कि सब समता ही आत्मा का मूल स्वभाव है तो आत्मा च्युत क्यों हो जाती है, उस पर कर्मों का बन्धन कैसे लग जाता है। आचारंग में आत्मा के च्युत होने का कारण आसक्ति बताया गया है तथा स्पष्ट कहा गया है कि विषय भोगों के दुःख रूप को जानने वाला विद्वान पुरुष विषयों में आसक्त नहीं होता वो समस्त कर्मों, चारमूल घाती और चार अघाती कर्मों को क्षयकर जन्ममरण की प्रक्रिया से मुक्त हो जाता है।

तम्हा अइविज्जो परमंतिणच्चा आयंकदंसी ण करेइपांव।
अग्गं मूलं य विगिंच धीरे, पलिच्छिंदियाणं णिक्कम्मदंसी।। (११०-१११)

प्रतिकूल परिस्थितियों में समभाव बनाये रखने के लिये सम्यक दर्शन, ज्ञान और चारित्र का मार्ग अपनाने का निर्देश समस्त जैन वाङ्मय में मिलता है। वाचक उमास्वाति ने अपने तत्वार्थ सूत्र के प्रथम श्लोक के प्रारम्भ में ही सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र को मोक्ष मार्ग बताया है। आचारांग में सीधे-सीधे दर्शन चारित्र का उल्लेख नहीं करके 'किट्टति तेसिं समुटिठयाणं निक्खिदण्डाणं समाहियाणं पण्पाणमंताणं इह मुत्ति मग्गं' सूत्र द्वारा अहिंसा प्रज्ञा और समाधि के रूप में त्रिविध साधना मार्ग का उल्लेख किया गया है। मनोविज्ञानिक दृष्टिकोण से मानवीय चेतना के तीन पक्ष ज्ञान अनुभूति और संकल्प ही का विस्तृत रूप आचारांग के त्रिविध मार्ग रूप में निहित है।

आचारंग में सम्यक् दर्शन का अर्थ सत्य तत्व का साक्षात्कार या यथार्थ दृष्टि माना गया है तथा उसके लिये 'समत्त दं करेइ पाव, आयंकदंसी न करेइ पाव, वीरा सम्मत दंसिणो, जे अणण्णदंसी' आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है।

'जे एगं जाणई से सव्व जाणई'– जो एक को जानता है वह सबको जानता है। जो आया से विण्णाया— जो आत्मा है वही विज्ञाता आदि अनेक प्रसंग में ज्ञान की चर्चा है। ज्ञान के द्वारा वस्तु का यथार्थ स्वरूप स्पष्ट हो जाता है। 'उद्देसो पासगस्स णत्थि'।।१०४।। अर्थात् जो मनुष्य ज्ञानवान है उसके लिये उपदेश की आवश्यकता नहीं है।

आध्यात्मिक साधना के क्षेत्र में दर्शन और ज्ञान के बाद मुक्ति के लिये चारित्र को आवश्यकता माना गया है। चारित्र का उद्देश्य–आत्मा को बन्धन से मुक्त कर चरम एवं परम आदर्श मोक्ष प्राप्त करना है। चारित्र के दो रूप माने गये है व्यवहार और निश्चय। आचारांग में निश्चय चारित्र के रूप में 'सम्रता' यानि 'स्वरूप रमणता' तथा व्यवहार चारित्र के अन्तर्गत आचरण के विधि विधानों का निरूपण है। व्यवहार चारित्र में समिति गुप्ति, परिषह जय, इन्द्रिय निग्रह, तप, ध्यान, समाधि, व्रत नियम-संयम आदि साधन साधक के लिये उपादेय माने गये है। व्यवहार चारित्र निश्चय चारित्र को प्राप्त करने का साधन है। व्यवहार चारित्र के मूलभूत अंग है पंच महाव्रत-अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य। ये महाव्रत केवल व्यक्तिगत जीवन के लिये ही नहीं अपितु, समस्त मानव जीवन के लिये तथा समाज में संतुलन के लिये अनिवार्य है।

अहिंसा को आचारंग में 'एस धम्मे सुद्धे निच्चे सासए' अर्थात् अहिंसा सार्वभौम है जो किसी व्यक्ति जाति वर्ग देश या काल से बंधी हुई नहीं है। अहिंसा का बहुत ही सूक्ष्म विवेचन जैन शास्त्रों में मिलता है और आचारांग की साधना पद्यति का सारभूत तत्व अहिंसा ही है। 'सव्वेसिं पाणणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसि जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं असायं अपरिणिव्वाणं महब्भयं दुक्खं त्ति बेमि।।१३३

जिस प्रकार आपको दुख अप्रिय है उसी प्रकार सब प्राणी, सब भूत, सब जीव और सब सत्वों के लिये दु:ख मन के प्रतिकूल है, अप्रिय है आनन्द रहित है, महान् भयकारी है अत: किसी जीव का हनन नहीं करना चाहिये।

जे अज्झत्थं जाणई से बहिया जाणई।

जे बहिया जाणई से अज्झत्थं जाणई एयं तुलमएणेसिं।।५१

ज्ञानियों के ज्ञान का सार यही है कि किसी के हनन की इच्छा न करे। आचारंग में साधक को मनसा वचन और कर्मणा किसी भी रूप में जीव की हिंसा करने का निषेध है। 'आरम्भजंदुक्ख' अर्थात् संसार के जितने भी दुख है वे सब हिंसा से उत्पन्न होते है। अहिंसा की विषद विवेचन में दो रूप बताये गये है। भाव हिंसा और द्रव्य हिंसा।

आचारंग के अनुसार अज्ञानी और विषयातुर मनुष्य निम्न कारणों से हिंसा करते है— कुछ लोग '**इमस्स चेव जीवियस्स**' इस जीवन के लिये अर्थात् जीवन जीने के लिये 'परिवंदणमाणण पूयणाए' - प्रशंसा के लिये, मान के लिये, पूजा प्रतिष्ठा के लिये, 'जाइमरणमोयणाए'— जन्म मरण से छूटने के लिये। एकेन्द्रिय जीवों की हिंसा सम्बन्धी उल्लेख आचारंग में विस्तृत रूप से मिलता है।

अट्टे लोए परिजुएण दुस्संबोहे।

अस्सिलोए पव्वहिये तत्थ तत्थ पढो पास आउरा परितावेंति।।

अज्ञानी विषया सक्त जीव अपने स्वार्थ के लिये भिन्न भिन्न प्रकार से पृथ्वीकाय का आरम्भ समारम्भ करते हैं किन्तु विवेकी पुरुष ऐसा नहीं करते।

'तं से अहियाए, तं से अबोहिए।'

पृथ्वी का आरम्भ पुरुष के अहित के लिये उसके बोध के नाश के लिये होता है अर्थात् जो पृथ्वीकाय का आरम्भ करते है उन्हें सम्यक्त्व बोधि प्राप्त नहीं होता।

जे लोए अब्भाइक्खई से अत्ताणं अब्भाइक्खई,

जे अत्ताणं अब्भाइक्खइ से लोयं अब्भाइक्खई ।।२२

इसी प्रकार आचारंग के पहले अध्ययन के २,३,४,५,६ तथा ७ उद्धेशक में एकेन्द्रिय जीवों पृथ्वीकाय, अपकाय, वायुकाय, अग्निकाय और वनस्पतिकाय जीवों के विषय में प्रकाश डाला गया है।

आचारंग के अनुसार अहिंसा एक पूर्ण आध्यात्मिक आदर्श एवं धर्म का सार तत्व है। सूत्र १/२/५, १/२/१ में अहिंसा के दो भेदों का वर्णन मिलता है आरम्भी और संकल्पी।

आचारंग में अहिंसा की उच्च पराकाष्ठा प्राप्त होती है।

तुमंसि णाम तं चेव जं हंतव्वंति मएणासि, तुमंसिणाम तं चेव जं अज्जावेयव्वं ति मएणासि, तुमंसि नाम तं चेव जं परियावेयव्वंति मरणसि, एवं जं

जं – जिसको, हंतव्वं तिमएणासि–तुम मारने के योग्य मानते हो मान लो कि वह तुम ही हो— जिसको तुम आज्ञा देने योग्य समझते हो मान लो वह तुम ही हो। जिसको तुम परिताप देने योग्य मान रहे हो मान लो वह तुम ही हो- इसलिये किसी प्राणी का घात न करे और न दूसरो से करवाये तथा अनुमोदन भी न करे क्योंकि अपनी आत्मा को ही अर्थात् हिंसा करने वाले को ही प्राणियों की हिंसा का दुःख रूप फल भोगना पड़ता है यह जानकर किसी को मारने की इच्छा भी न करे। अहिंसा का हार्द है कि व्यक्ति अपनी चेतना के समान दूसरों की चेतना को समझे और यही जैन दर्शन का मूल आचार है जिसका उल्लेख हमें आचारंग सूत्र में स्पष्ट रूप से मिलता है। यहाँ अहिंसा केवल आदर्श के रूप में नहीं अपितु उसकी व्यवहारिक भूमिका को प्रतिपादित किया गया है। आचारंग में मुनि को मन वचन और कायिक योग का निरोध के सन्दर्भ में तीन गुप्तियों मनोगुप्ति वचन गुप्ति और कायगुप्ति का निरोधकर पंच प्रकार की समितियों के माध्यम से संयम में विचरण करने का निर्देश दिया गया है। गुप्तियाँ और समितियाँ एक दूसरे की पूरक होती है।

इस प्रकार हम देखते है कि आचारंग में जितने भी नैतिकता सम्बन्धी सिद्धान्त है उन सबका मूल अहिंसा है। अन्य चार महाव्रतों का पालन भी अहिंसा की भावना को पुष्ट करने के लिये हुआ है। कलिकाल सर्वज्ञ

हेमचन्द्राचार्य ने योग शास्त्र में व्रतों के सन्दर्भ में कहा है कि अहिंसा यदि पानी है तो अन्य व्रत सत्य अस्तेय उसकी रक्षा करने वाला है। अतः 'एस मग्गे अरिएहिं पवेइए ज हेत्थ कुसले णोवलिपिज्पसि' १/२/२ आर्यों द्वारा प्रतिपादित यह अहिंसा मार्ग सर्वश्रेष्ठ है।

दूसरे महाव्रत सत्य के विषय में आचारंग में लिखा है सत्य की साधना करने वाले संसार समुद्र से पार हो जाते है अतः हे पुरुष तू सत्य की साधना कर। 'सच्चामि धितिं कुव्वह' तू सत्य में घृति कर। सत्य में अधिष्ठित प्रज्ञावान मुनि समस्त पापों का शोषण करता है। आचारंग में स्पष्ट निर्देश मिलता है कि क्रोध, लोभ, भय, हास्य आदि असत्य बोलने से कारणों से मौजूद रहने पर भी मन वचन काया से असत्य नहीं सोचना, असत्य नहीं बोलना और असत्य का आचरण न करना ही सत्य महाव्रत है।

शास्त्रों में अहिंसा और सत्य की रक्षा के लिये अस्तेय व्रत का पालन भी अनिवार्य माना गया है। आचारंग के द्वितीय श्रुत स्कन्धा के सप्तम अध्याय में अस्तेय व्रत की चर्चा की गई है। कहा गया है निर्ग्रन्थ साधक कृत, कारित, अनुमोदित तथा मन वचन काया से चौर्य कर्म से अपने को विरत रखता है।

ब्रह्मचर्य वह अग्नि है जिसमें तपकर आत्मा परिशुद्ध बनती है। अहिंसा सत्य आत्मबल बढ़ाते है तो ब्रह्मचर्य शरीर आत्मा दोनों को अपरिमित शक्तिवान बनाता है। आचारंग टीका में शीलांकाचार्य ने ब्रह्मचर्य के सन्दर्भ में कहा है 'पर्यन्ते आहारमपि व्यवच्छिन्द्याद आम्रि पातं विदध्यात्, अप्युद्बन्धन कुयति, न च स्त्रीषु मनः कुर्यादिति' अर्थात् अन्य सभी उपायों के असफल होने पर मुनि जीवन भरके लिये सर्वथा आहार त्याग दे, ऊपर से गिर जाये या फांसी लगा ले लेकिन मन को स्त्रियों में न जाने दे अर्थात् ब्रह्मचर्य खण्डित न होने दे। डॉ. फर्नेण्डो वेल्लिनी फिलिप ने कहा है कि भगवान महावीर के व्यक्तित्व में सर्वप्रधान गुण मेरी दृष्टि में अनन्तवीर्य रहा है।

आचारंग में अपरिग्रह विषयक गहरी विवेचना की गयी है। सूत्र १/३/२ और सूत्र २/१५ आदि में स्पष्ट लिखा है कि अर्थ लोभी व्यक्ति परिग्रह की पूर्ति

के लिये दूसरों का वध करता है, उन्हें कष्ट देता है, यातनाएं पहुँचाता है, धन प्राप्ति के लिये चोर, लुटेरा, संहारक बन जाता है अतः यह संग्रह वृत्ति सभी पापों का मूल है, हिंसा का कारण है।

एतदेव एगेसिं महब्भयं भवई, लोगवित्तं य णं

उवेहाए, एए संगे अवियाणओ ।।१४९

असंयमी पुरुषों का परिग्रह महान् भयदायक होता है। जो पुरुष इन परिग्रहों का सेवन नहीं करता अर्थात् परिग्रह त्यागकर देता है उसको भय नहीं होता है। शास्त्रकार ने आगे लिखा है– 'से सुपदिबंद्ध सुवणीयंति णच्चा पुरिसा परम चक्खु विपरक्कम, एएसु चेव बंभचेरं त्ति बेमि'

परिग्रह त्यागने वाले पुरुष के ही ज्ञानादि अच्छी तरह स्थित है यह जानकर हे पुरुष! ज्ञान और मोंक्ष में दृष्टि रखते हुए संयम पालन करने में पराक्रम करो। जो परिग्रह से रहित है उन्हीं में ब्रह्मचर्य अर्थात् उन्हीं में ब्रह्मचर्य के गुण निहित रहते है। अतः सच्चा साधक वही है जो पूर्ण अनासक्त हो और ममत्व का भी त्याग कर दे। यहाँ शरीर का ममत्व भी परिग्रह माना गया है।

इस प्रकार आत्मा अनन्त काल से कर्मों से आवृत्त है और कर्मों के आवरण से आत्मा को मुक्त कराने के लिए महाव्रतों की साधना की जाती है। जब यह साधना पराकाष्टा पर पहुँच जाती है तो आत्मा परमात्मा बन जाती है या मोंक्ष प्राप्त कर लेती है। यह पूर्ण रूप से स्वीकार किया गया है कि जैन शास्त्रों में आचारंग आचार दर्शन का प्रथम तथा प्राचीनतम ग्रन्थ है। यहाँ नैतिकता के नियम सापेक्ष भी है और निरपेक्ष भी। जो नियम देश, काल परिस्थिति अनुसार बदलते हैं वो सापेक्ष है। निरपेक्षवादी मानते है कि नैतिकता के नियम अपरिवर्तनशील होते है जो किसी भी परिस्थिति में नहीं बदलते। यही सापेक्ष और निरपेक्ष रूप उत्सर्ग और अपवाद रूप में भारतीय दार्शनिक विचारधारा में हैं। इस विषय में आचारंग एकांगी मत नहीं अपनाता है–अनेकान्तवादी दृष्टिकोण के आधार पर यहाँ अहिंसा को सार्वभौम नैतिक सिद्धान्त के रूप में स्वीकार किया है वहीं दूसरी ओर अहिंसा के भेद कर उसने अपवाद भी बताये गये है। पंच महाव्रतों में अहिंसा को सबसे

अधिक महत्व दिया गया है। एक स्थान पर समता को धर्म कहा गया है और दूसरी तरफ अहिंसा को सार्वभौम धर्म स्वीकार किया गया है। वस्तुतः अहिंसा और समता दो भिन्न धर्म नहीं है। अहिंसा का आन्तरिक रूप ही समता है और समता अहिंसा द्वारा ही बाह्य रूप में अभिव्यक्त होती है। आचारंग के अनुसार नैतिकता और अनैतिकता का मापदण्ड अहिंसा है। जहाँ हिंसा है वहाँ अनैतिकता है और जहाँ अहिंसा है वहाँ नैतिकता। अतः आचारंग में निश्चय नैतिकता और व्यवहारिक नैतिकता दोनों को स्वीकार किया गया है। पार्श्वनाथ का चातुर्याम तथा महावीर का पंचव्रत उपदेश सापेक्ष नैतिकता का प्रतिपादन करता है।

'जहा अंतो तहा बाहिं, जहा बहिं तहा अंतो'

अर्थात् जैसा भीतर है वैसा बाहर होना चाहिये और जैसा बाहर है वैसा भीतर होना चाहिये। निश्चय नैतिकता में आदर्श है तो व्यवहार नैतिकता यथार्थ। तीर्थंकर भी वैयक्तिक साधना की उपलब्धि के बाद ही लोकहित को उपदेश देते हुए स्वयं समता प्राप्त कर समाज के सभी वर्गों को समतापूर्ण व्यवहार अहिंसा का पालन करने का संदेश देते है जो एक आदर्श समाज की संरचना के लिये आवश्यक है।

-------------

# योगशतक

प्रस्तावना— डॉ. इन्दुकला हीराचन्द झवेरी

योग शब्द का उपयोग ऋग्वेद के मंत्रों में भी हुआ है,[१] परन्तु वहाँ उसका समाधि अथवा आध्यात्मिक भाव विवक्षित नहीं है। उपदिषदों में खास तौर पर अतिप्राचीन समझे जाने वाले भागों में भी, आध्यात्मिक अर्थ में योग पद का प्रयोग उपलब्ध नहीं होता। कठ एवं श्वेताम्वतर जैसे कुछ उत्तरकालीन उपनिषदों में आध्यात्मिक अर्थ में योग पद प्रयुक्त है।[२] सामान्यतः ऋग्वेद से उपनिषद् तक के साहित्य में तपस् शब्द का आध्यात्मिक अर्थ में जितनी छूट से और जितना विविध भावों में प्रयोग दीखता है उतना योग पद का प्रयोग नहीं हुआ है। इसके अलावा, जब कभी आध्यात्मिक अर्थ में प्रयुक्त योग पद उपनिषदों में दीखता है वहाँ भी उसका सम्बन्ध मुख्यतः सांख्य तत्त्वज्ञान[३] और उस पर अवलम्बित किसी योगपरम्परा के साथ आया है। महाभारत में योग शब्द आध्यात्मिक अर्थ में ढेर स्थानों पर प्रयुक्त मिलता

---

१. ऋग्वेद १.३४.९, २.८.१, ९.५८.३, १०.१६६.५, १.१८.७, १.५.३।

२. योग आत्मा। —तैत्तिरीय उप. २.४।

तां योगमिति मन्यन्ते स्थिरामिन्द्रियधारणाम्।
अप्रमत्तस्तदा भवति योगो हि प्रभवाप्ययौ।। —कठोपनिषद् २.६.११

... तत्कारणं सांख्ययोगाधिगम्यं ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशैः।

—श्वेताम्वतर उप. ६.१३

... अध्यात्मयोगाधिगमेन देवं मत्वा धीरो हर्षशोकौ जहाति।

—कठोपनिषद् १.२.१२

३. महाभारत में उल्लिखित २४, २५ एवं २६ तत्त्व माननेवाली सांख्य परम्पराएँ तो पूर्वकाल से प्रचलित तथा भिन्न-भिन्न रूप से विकसित होनेवाली सांख्य विचारसरणी का परिपाक मात्र है।

है। गीता महाभारत का एक भाग ही समझी जाती है और वह सांख्य तत्त्वज्ञानकी भूमिका पर प्रतिष्ठित है। गीता को योगशास्त्र भी कहा जाता है। उसमें जगह-जगह आध्यात्मिक अर्थ में योग शब्द के प्रयोग को[१] देखकर उसका योगशास्त्र नाम सार्थक भी है। प्राचीन कहे जा सके ऐसे जैन आगमों में योग पद का आध्यात्मिक अर्थ में प्रयोग तो मिलता है[२], पर वह तप पद जितना व्यापक नहीं है। बौद्ध पिटकों में भी योग पद समाधि पद जितना व्यापक नहीं है। यह सब देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि सांख्य तत्वज्ञों और साधकों ने जब से योग पद का अनेक आध्यात्मिक भावों में खुलकर प्रयोग किया और गीता में ज्ञानयोग आदि भिन्न-भिन्न योगरूप से योग की महिमा जबसे प्रभावशाली काव्यमय भाषा में गाई गई तबसे आध्यात्मिक साधना की सभी परम्पराओं में योग शब्द का माहात्म्य बहुत बढ़ गया। इससे पूर्वकाल में योग अथवा समाधि जिस तपका अंग थी उसी तपने सांख्य-योग परम्परा में योग के अंग का स्थान लिया।

आध्यात्मिक साधना के साथ जैसे तप और योग पद जुड़े हुए हैं वैसे ही संवर, ध्यान एवं समाधि शब्द भी उससे विशेष सम्बन्ध रखते हैं। ध्यान और समाधि शब्द तो सभी आध्यात्मिक परम्पराओं में साधारण से हैं, पर संवर शब्द के बारे में ऐसा नहीं है। इस शब्द का आध्यात्मिक साधना में खुलकर और व्यापक प्रयोग तो मुख्यतः जैन ग्रन्थों में हुआ है और वह भी महावीर के पूर्व काल से।[३] सांख्य साधकों ने अथवा सांख्य तत्त्वावलम्बी भागवत जैसी परम्परा ने गीता की महिमा के साथ योग की महिमा भी फैलाई। अतः

---

१. ४.२८ ; ३.३-४, ५.६-७, ६.१७, २३ और २९; ६.४-६; ८.१०-२।
इन सब उल्लेखों के लिए देखो गीतारहस्या. २ की शब्दसूचि।

२. सूत्रकृतांग १.१६.३, उत्तराध्ययन ८.१४, ११.१४।

३. महावीर ने जो तत्त्वज्ञान और आचार अपनाये वे पार्श्वनाथ से चले आते थे और पार्श्वनाथ का ही श्रुत महावीर को मिला था। देखो पं. सुखलालजी कृत चार तीर्थंकर पृ. १३६।

उसके पश्चात् सांख्य परम्परा का अवलंबन लेकर आध्यात्मिक साधना के निदर्शक जो शास्त्र लिखे गये वे सब योगशास्त्र के नाम से ही प्रसिद्ध हुए। पातंजल योगशास्त्र से पहले भी वैसे शास्त्रों के अस्तित्व की जो धारणा है वे भी योगशास्त्र के नाम से ही प्रसिद्ध थे।[१] जैन परम्परा में अत्यन्त प्रसिद्ध संवर शब्द में योगशास्त्रों में व्यापक योग शब्द – इन दोनों का अर्थ एवं भाव एक होने पर[२] भी योग एवं योगशास्त्र ये शब्द सर्व परम्पराओं में

---

१. श्रीशंकराचार्य अपने ब्रह्मसूत्रभाष्य में योगदर्शन का खण्डन करते समय इस प्रकार लिखते हैं: योगशासास्त्रेऽपि अथ तत्त्वदर्शनाभ्युपायो योग इति सम्यदर्शनाभ्युपायत्वेन योगोऽङ्गीक्रियते। किन्तु अथ तत्त्वदर्शनाभ्युपायो योगः यह सूत्र उपलब्ध योगसूत्र में नहीं है। पतञ्जलिकृत योगशास्त्र अथ योगानुशासनम् से शुरु होता है। अतः श्रीशंकराचार्य द्वारा निर्दिष्ट योगशास्त्र दूसरा ही कोई होगा। वाचस्पति मिश्र ब्रह्मसूत्र के उपर्युक्त उद्धरण के ऊपर सीधा तो प्रकाश नहीं डालते, पर उसी के समान विचार प्रदर्शित करते हुए कहते हैं कि— अतएव योगशास्त्रं व्युत्पादयिताह स्म भगवान्वार्षगण्यः। इस तरह योगशास्त्र के व्युत्पादक का नाम वह वार्षगण्य देते हैं। इसी प्रकार पतञ्जलि के योगानुशासन से पहले का हिरण्यगर्भ योगशासन अहिर्बुध्न्यसंहिता के १२वें अध्याय के अनुसार दो विभाग अथवा संहिताओं में विभक्त था। विस्तार के लिए देखो हिन्द तत्त्वज्ञान का इतिहास (गुजराती) पूर्वार्ध, पृ. ११२-४।

२. जैन परम्परा आस्रव के निरोध के संवर कहती है— आस्रवनिरोधः संवरः (तत्वार्थ ९.१)। योगशास्त्र (१.२) चित्तवृत्ति के निरोध को योग कहता है— योगश्चिवृत्तिनिरोधः। इस प्रकार संवर और योग दोनों पदों का मुख्य अर्थ निरोध है, पर एक में निरोध के विशेषणरूप से आस्रव आता है, जबकि दूसरे में चित्तवृत्ति।

जैन परम्परा आस्रव में मिथ्यादर्शन, अविरति, प्रमाद, कषाय एवं योग को गिनाती है, जनमें सचमुच देखा जाय तो मिथ्यादर्शन, कषाय एवं योग ये तीन ही मुख्य हैं। अविरति और प्रमाद तो कषाय का ही विस्तार है। यहाँ यह भी जान लेना चाहिए कि जैनसम्मत आस्रवों में जो योग आता है वह योगपरम्परा सम्मत चित्तवृत्तियों के स्थान में है। जैनपरम्परा में मानसिक, वाचिक और कायिक त्रिविध प्रवृत्ति को योग कहा जाता है। इनमें भी केन्द्रस्थान में तो मानसिक प्रवृत्ति ही है। अतः ऐसा कहा

जितने प्रसिद्ध हैं उतना संवर शब्द वैदिक परम्पराओं में प्रसिद्ध नहीं है। तप की प्रधानता के समय ध्यान और समाधि तप के अंग समझे जाते थे बाद में योग का माहात्म्य व्यापक होने पर वे योग के अंग बने। इस तरह आध्यात्मिक साधना की परम्पराओं पर नजर डालने से ऐसा प्रतीत होता है कि इस साधना के अनेक अंगों में से एक पर कभी किसी ने अधिक भार दिया और उसे मुख्य अंगी मानकर बाकी को उसके अंग रूप से स्थापित किया तो दूसरे ने अन्य अंग को मुख्य अंगी मानकर बाकी को उसके अंगरूप माना। उदाहरणार्थ, जिन्होंने तप को मुख्य अंगी माना उन्होंने स्वाध्याय, ध्यान एवं समाधि आदि

---

जा सकता है कि योगसूत्र में चित्तवृत्ति पद से जो सूचित होता है वही जैनपरम्परा में आस्रवरूप योग है।

जैन परम्परा आस्रव में मिथ्यादर्शन, अविरति, प्रमाद, कषाय एवं योग को गिनाती है, जिनमें सचमुच देखा जाय तो मिथ्यादर्शन, कषाय एवं योग ये तीन ही मुख्य हैं। अविरति और प्रमाद तो कषाय का ही विस्तार है। यहाँ यह भी जान लेना चाहिए कि जैनसम्मत आस्रवों में जो योग आता है वह योगपरम्परा सम्मत चित्तवृत्तियों के स्थान में है। जैनपरम्परा में मानसिक, वाचिक और कायिक त्रिविध प्रवृत्ति को योग कहा जाता है। इनमें भी केन्द्र स्थान में तो मानसिक प्रवृत्ति ही है। अतः ऐसा कहा जा सकता है कि योगसूत्र में चित्तवृत्ति पद से जो सूचित होता है वही जैन परम्परा में आस्रवरूप योग है।

जैन परम्परा आस्रवरूप योग के दो प्रकार कहती है : सकषाय योग और अकषाय योग, जब कि योगशास्त्र में चित्तवृत्ति के क्लिष्ट एवं अक्लिष्ट ऐसे दो प्रकार के उल्लेख है। पहले में कषाय पद से जो और जितना अर्थ विवक्षित है वही और उतना ही अर्थ दूसरे में क्लेश पद से लिया जाता है। परिभाषा भेद की तुलना इस प्रकार है—

| | योगशास्त्र | | जैनदर्शन |
|---|---|---|---|
| १. | अविद्या | १. | मिथ्यादर्शन |
| २. | अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश | २. | क्रोध, मान, माया, लोभ |

जैन परम्परा प्रथम सकषाय योग का निरोध और अन्त में अकषाय योग का निरोध

को तप के अंगरूप माना[१] और जिन्होंने योग को मुख्य अंगी माना उन्होंने तप, ध्यान, समाधि आदि को उसके अंगरूप माना।[२] इस प्रकार यदि कोई फर्क है तो वह सिर्फ गौण-मुख्य भाव का अथवा अंगागीभावकी व्यवस्था का है। इतनी बात सच है कि जैसे-जैसे आध्यात्मिक साधना की परंपराएँ चारों ओर फैलती गई वैसे-वैसे उसमें कई अंग कालक्रम से तथा अनुभव के आधार पर दाखिल भी होते गये। जैसे कि, मैत्रायणि उपनिषद् में योग के छह अंगों का निर्देश है जब कि योगशास्त्र में आठ अंग हैं।[३]

क्रमशः

---

अर्थात् अयोगावस्था मानती है। इसी भाँति योग परम्परा भी प्रथम क्लिष्ट वृत्तियों का और बाद में क्रमशः अक्लिष्ट का निरोध मानती है। इस प्रकार दोनों परम्पराओं में परिभाषा और वर्गीकरण भिन्न हैं, पर अर्थ और भाव एक हैं।

उपर्युक्त साम्य केवल इन दो परम्पराओं तक ही मर्यादित नहीं है, परन्तु भारतीय सभी आध्यात्मिक परम्पराओं में एक अथवा दूसरी तरह से, वह देखा जाता है।

१. जैन परम्परा में स्वाध्याय, ध्यान आदि अभ्यन्तर तप के अंग हैं

२. तपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः।—योगसूत्र २.१

३. प्राणायामः प्रत्याहारो धारणा तर्कः समाधिः षडंग इत्युच्यते योगः। – मैत्रा० ६.१८
यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि। – योगसूत्र २.२९

# सुवर्णभूमि में कालकाचार्य

डॉ. उमाकान्त शाह

श्री. संघदास गणि क्षमाश्रमणकृत **बृहत्कल्पभाष्य**[१] (विभाग १, पृ. ७३-७४) में निम्नलिखित गाथा है :

सागरियमप्पाहण, **सुवन्न** सुयसिस्स खं तलक्खेण।

कहणा सिस्सागमणं, धूलीपुंजोवमाणं च ।। २३९

इस गाथा की टीका में श्रीमलयगिरि (वि. सं. १२०० आसपास) ने कालकाचार्य के सुवर्णभूमि में जाने की हकीकत विस्तार से बतलाई है जिसका सारांश यहाँ दिया जाता है।

उज्जयिनी नगरी में सूत्रार्थ के ज्ञाता आर्य कालक नाम के आचार्य बड़े परिवार के साथ विचरते थे। इन्हीं आर्य कालक का प्रशिष्य, सूत्रार्थ को जाननेवाला सागर (संज्ञक) श्रमण सुवर्णभूमि में विहार कर रहा था। आर्य कालक ने सोचा, मेरे ये शिष्य जब अनुयोग को सुनते नहीं तब मैं कैसे इनके बीच में स्थिर रह सकूँ? इससे तो यह अच्छा होगा कि मैं वहाँ जाऊँ जहाँ अनुयोग का प्रचार कर सकूँ, और मेरे ये शिष्य भी पीछे से लज्जित होकर सोच समझ पाएंगे। ऐसा खयाल करके उन्होंने शय्यातर को कहा: मैं किसी तरह (अज्ञात रहकर) अन्यत्र जाऊँ। जब मेरे शिष्य लोग मेरे गमन को सुनेंगे तब तुमसे पृच्छा करेंगे। मगर, तुम इनको कहना नहीं और जब ज्यादा तंग करें तब तिरस्कारपूर्वक बताना कि (तुम लोगों से निर्वेद पाकर) सुवर्णभूमि में सागर (श्रमण) की ओर गये हैं। ऐसा शय्यातर को समझाकर रात्रि को जब सब सोये हुए थे तब वे (विहार करके) सुवर्ण भूमि को गये। वहाँ जाकर उन्होंने स्वयं खंत मतलब कि वृद्ध (साधु) हैं ऐसा बोलकर सागर के गच्छ में प्रवेश पाया। तब यह वृद्ध (अति वृद्ध–मतलब कि अब

---

१. मुनि श्रीपुण्यविजयजी-संपादित, "निर्युक्ति-लघुभाष्य-वृत्त्युपेतं-**बृहत्कल्पसूत्रम्**" विभाग १ से ६, प्रकाशक, श्री जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर।

जीर्ण और असमर्थ-नाकामीयाब होते जाते) हैं ऐसे खयाल से सागर आचार्य ने उनका अभ्युत्थान आदि से सम्मान नहीं किया। फिर अत्थ-पौरुषी (व्याख्यान) के समय पर (व्याख्यान के बाद) सागर ने उनसे कहा : हे वृद्ध ! आपको यह (प्रवचन) पसंद आया? आचार्य (कालक) बोले : हाँ ! सागर बोला : तब अवश्य व्याख्यान को सुनते रहो। ऐसा कहकर गर्वपूर्वक सागर सुनाते रहे।

अब दूसरे शिष्यलोग (उज्जैन में) प्रभात होने पर आचार्य को न देखकर सम्भ्रान्त होकर सर्वत्र ढूँढते हुए शय्यातर को पूछने लगे मगर उसने कुछ बताया नहीं और बोला : जब आप लोगों को स्वयं आचार्य कहते नहीं तब मेरे को कैसे कहते ? फिर जब शिष्यगण आतुर होकर बहुत आग्रह करने लगे तब शय्यातर तिरस्कारपूर्व बोला : आप लोगों से निर्वेद पाकर सुवर्णभूमि में सागर श्रमण के प्रास चले गये हैं।

फिर वे सब सुवर्णभूमि में जाने के लिए निकल पड़े। रास्ते में लोग पूछते कि यहाँ कौन से आचार्य विहार कर रहे हैं? तब वे बताते थे : आर्य कालक। अब इधर सुवर्णभूमि में लोगों ने बतलाया कि आर्य कालक नाम के बहुश्रुत आचार्य बहु परिवार सहित यहाँ आने के खयाल से रास्ते में हैं। इस बात को सुनकर सागर ने अपने शिष्यों को कहा : मेरे आर्य आ रहे हैं। मैं इनसे पदार्थों के विषय में पृच्छा करूँगा।

थोड़े ही समय के बाद वे शिष्य आ गये। वे पूछने लगेः क्या यहाँ पर आचार्य पधारे हैं? उत्तर मिला : नहीं मगर दूसरे वृद्ध आये हैं। पृच्छा हुईः कैसे हैं? (फिर वृद्ध को देखकर) यही आचार्य हैं ऐसा कहकर उनको वन्दन किया। तब सागर बड़े लज्जित हुए और सोचने लगे कि मैंने बहुत प्रलाप किया और क्षमाश्रमणजी (आर्य कालक) से मेरी वन्दना भी करवाई। इसलिए आपका मैंने अनादर किया ऐसा कहकर अपराह्नवेला के समय मिथ्या दुष्कृतं में ऐसे निवेदन पूर्वक क्षमायाचना की। फिर वह आचार्य को पूछने लगाः हे क्षमाश्रमण! मैं कैसा व्याख्यान करता हूँ? आचार्य बोलेः सुन्दर, किन्तु गर्व मत करो। फिर उन्होंने धूलि-पुञ्ज का दृष्टान्त दिया। हाथ में धूलि लेकर एक स्थान पर रखकर फिर उठाकर दूसरे स्थान पर रख दिया,

फिर उठाकर तीसरे स्थान पर। और फिर बोले कि जिस तरह यह धूलिपुञ्ज एक स्थान से दूसरे स्थान पर रक्खा जाता हुआ कुछ पदार्थों (अंश) को छोड़ता जाता है, इसी तरह तीर्थंकरों से गणधरों और गणधरों से हमारे आचार्यों तक, आचार्य-उपाध्यायों की परम्परा में आये हुए श्रुत में से कौन जान सकता है कि कितने अंश बीच में गलित हो गये? इस लिए तुम (सर्वज्ञता का–श्रुत के पूर्ण विज्ञाता होने का) गर्व मत करो। फिर जिनसे सागर ने मिथ्या दुष्कृत पाया है और जिन्होंने सागर से विनय अभिवादन इत्यादि पाया है ऐसे आर्य कालक ने शिष्य-प्रशिष्यों को अनुयोग-ज्ञान दिया।

मलयगिरिजी का दिया हुआ यह वृत्तान्त निराधार नहीं है। पहले तो उनके सामने परम्परा है; और दूसरा यह सारा वृत्तान्त मलयगिरिजी ने प्राचीन बृहत्कल्प-चूर्णि से प्रायः शब्दशः उद्धृत किया है। सूत्र के बाद निर्युक्ति, तदनन्तर भाष्य और तदनन्तर चूर्णि की रचना हुई। फिर एक और महत्त्वपूर्ण आधार उत्तराध्ययन-निर्युक्ति का भी है जिसमें सुवर्णभूमि में सागर के पास कालकचार्य के जाने का उल्लेख है– **उज्जेणि कालखमणा सागरखमणा सुवएर्णभूमीए (उत्तराध्ययन-निर्युक्ति,** गाथा १२०), उत्तराध्ययन-चूर्णि में यही वृत्तान्त मिलता है।[२] खुद बृहत्कल्प-भाष्य में कालक-सागर और कालक-गर्दभिल्ल का निर्देश तो है किन्तु उपलब्ध ग्रन्थ में निर्युक्ति और भाष्य गाथाओं के मिल जाने से इस बात का निश्चय नहीं किया जाता कि उपर्युक्त गाथा निर्युक्ति गाथा है या भाष्य गाथा। अगर निर्युक्ति गाथा है तब तो यह वृत्तान्त कुछ ज्यादा प्राचीन है। उत्तराध्ययन निर्युक्ति की साक्षी भी यही सूचन करती है।

यह एक महत्त्वपूर्ण उल्लेख है जिसकी ओर उचित ध्यान नहीं दिया गया। पहले तो भारत की सीमा से बाहर, अन्य देशों में जैन धर्म के प्रचार का प्राचीन विश्वसनीय यह पहला निर्देश है। बृहत्कल्प भाष्य ईसा की ६वीं सदी से अर्वाचीन नहीं है यह सर्वमान्य है और निशीथ-चूर्णि में ऐसे निर्देश हमें मिलते हैं।[३] और इसी बृहत्कल्पभाष्य में भी निम्नलिखित गाथा है जिसका हमें खयाल करना चाहिये—

---

२. **उत्तराध्ययन—चूर्णि** (रतलाम से प्रकाशित), पृ. ८३-८४.

३. **कालकाचार्य कथा** (प्रकाशक, श्री. साराभाई नवाब, अहमदाबाद) पृ. १-२ में **निशीथचूर्णि,** दशम उद्देश्य से उद्धृत प्रसंग।

विज्सा ओरस्सबली, तेयसलद्धी सहायलद्धी वा।
उप्पादेउं सासति, अतिपंतं कालकज्जो वा ।। ५५९३

—बृहत्कल्पसूत्र विभाग ५ पृ. १४८०

उपर्युक्त भाष्य-गाथा कालकाचार्य ने विद्या-ज्ञान से गर्दभिल्ल का नाश करवाया इस बात की सूचक है और टीका से यह स्पष्ट होता है। बृहत्कल्पभाष्य-गाथा ई. स. ५०० से ई. स. ६०० के बीच में रची हुई मालूम होती है।[४] और जैन परम्परा के अनुसार कालक और गर्दभ का प्रसंग ई. पू. स. ७४-६० के आसपास हुआ माना जाता है।

अब देखना यह है कि सागरश्रमण के दादागुरू आर्य कालक और गर्दभिल्ल-विनाशक आर्य कालक एक हैं या भिन्न। बृहत्कल्पभाष्यकार इन दोनों वृत्तान्तों की सूचक गाथाओं में दो अलग अलग कालक होने का कोई निर्देश नहीं देते। अगर दोनों वृत्तान्त भिन्न भिन्न कालकपरक होते तो ऐसे समर्थ प्राचीन ग्रन्थकार जरूर इस बात को बतलाते है। टीकाकार या चूर्णिकार भी ऐसा कुछ बतलाते नहीं और न ऐसा निशीथचूर्णिकार या किसी अन्य चूर्णिकार या भाष्यकार बतलाते हैं क्योंकि इनको तो सन्देह उत्पन्न ही न हुआ कि सागर के दादागुरु कालक गर्दभविनाशक आर्य कालक से भिन्न हैं जैसा कि हमारे समकालीन पण्डितों का अनुमान है।

बृहत्कल्पभाष्य और चूर्णि में मिलती कालक के सुवर्णभूमि-गमन वाली कथा में कालक के अनुयोग को उज्जैनवाले शिष्य सुनते नहीं थे ऐसा कथन है। आखिर में सुवर्णभूमि में भी कालक ने शिष्य-प्रशिष्यों को अनुयोग का

---

**दशाचूर्णि, व्यवहार-चूर्णि और बृहत्कल्पचूर्णि में** से कालक-विषयक अवतरणों के लिए देखो, वही, पृ. ४-५.

वही, पृ. ३६-३८ में भद्रेश्वरकृत **कहावली** में से कालक-विषयक उल्लेखों के अवतरण है। कहावली वि. सं. ८००-८५० की रचना है। इस विषय में देखो, **श्री उमाकान्त शाह का लेख, जैन सत्य-प्रकाश,** (अहमदाबाद) वर्ष १७, अंक ४, जान्युआरी १९५२, पृ. ८६ से आगे।

४. विशेष चर्चा के लिये देखो मुनिश्री पुण्यविजयजी लिखित प्रस्तावना, **बृहत्कल्पसूत्र,** विभाग ६, पृ. २०-२३।

कथन किया ऐसा भी इस वृत्तान्त में बताया गया है।[५] यहां कालक के रचे हुए अनुयोग-ग्रन्थों का निर्देश है। अनुयोग शब्द से सिर्फ व्याख्यान या उपदेश अर्थ लेना ठीक नहीं। व्याख्यान को सुनते भी हैं। यहाँ क्योंकि कालक की नई ग्रन्थरचना थी इसी लिए पुराने खयालवाले शिष्यों में कुछ अश्रद्धा थी। चूर्णिकार और टीकाकार ने ठीक समझकर अनुयोग शब्द का प्रयोग किया है।

हम आगे देखेंगे कि कालक ने लोकानुयोग और गण्डिकानुयोग की रचना की थी ऐसा पञ्चकल्पभाष्य का कथन है। इसी पञ्चकल्पभाष्य का स्पष्ट कथन है कि अनुयोगकार कालक ने आजीविकों से निमित्तज्ञान प्राप्त किया था। इस तरह सुवर्णभूमि जाने वाले कालक पञ्चकल्पनिर्दिष्ट अनुयोगकार कालक ही हैं और वे निमित्तज्ञानी भी थे। गर्दभ-विनाशक कालक भी निमित्तज्ञानी थे ऐसा निशीथचूर्णिगत वृत्तान्त से स्पष्टतया फलित होता है। इस तरह निमित्तज्ञानी अनुयोगकार आर्य कालक और निमित्तज्ञानी गर्दभ-विनाशक आर्य कालक भिन्न नहीं किन्तु एक ही व्यक्ति होना चाहिए क्योंकि दोनों वृत्तान्तों के नायक आर्य कालक नामक व्यक्ति हैं और निमित्तज्ञानी हैं। पहले हम कह चुके है कि प्राचीन ग्रन्थकारों ने दो अलग-अलग आर्य कालक होने का कोई इशारा भी नहीं दिया। यहीं कालक जो शक-कुल पारसकुल तक गये वही कालक सुवर्णभूमि तक भी जा सकते हैं। कालकाचार्य का यह विशिष्ट व्यक्तित्व था।

क्रमशः

५. देखो– "ताहे **अज्जकालया** चिंतेंति–एए मम सीसा **अणुओगं** न सुणंति x x x x x।" और, "ताहे मिच्छा दुक्कडं करित्ता आढत्ता **अज्जकालिया** सीसपसीसाण **अणुयोगं** कहेउं।" –**बृहत्कल्पसूत्र,** विभाग १, पृ. ७३-७४।

# सिंहल की राजकन्या

# सुदर्शना

आचार्यश्री विजयविशालसेनसूरिजी म. सा.

कुमारी की भक्ति, श्रद्धा और भावना उसके पवित्र और निर्दोष चहरे पर चमक रही थी जिसे देख सुन सभी विस्मित व नतमस्तक हो रहे थे।

राजा का तो दिल ही टूटा जा रहा था कि क्या एक लड़की, वह भी राजपुत्री ऐसा कर सकती है?

पुरोहित बोले, देखो राजकुमारी, भवसागर तैरने के तरीके हैं-कोई समुद्र में डुबकी मारने से तो समुद्र तैरा नहीं जा सकता। प्रथम धर्म को समझो तो सही। फिर आगे सोचो। पहला धर्म, गृहस्थाश्रम धर्म है तो सभी आश्रमों का पोषण करने वाला है।

पहले उसे देखा जाना ही नहीं तो क्या पता लगेगा धर्म का।

हाँ बेटी! पुरोहितजी सत्य कह रहे हैं। तू सारे संकल्प छोड़ दे। तेरे लिए हम शीघ्र ही योग्य राजकुमार खोजेंगे जो रूप, गुण, ऐश्वर्य, बल, पराक्रम, बुद्धिमत्ता एवं औदार्य आदि गुणों से युक्त और महान होगा।

पिताजी! ये सब अबोध लोगों को लुभाने वाली बातें हैं, अनुभवी को नहीं। ये घर-गृहंस्थी में कुछ भी सार नहीं है। मेरे लिए तो कोई नई बात भी नहीं है। मैंने सब कुछ देखा-परखा और पहचाना है। पति क्या होता है और कितने काम आता है मुझे मालूम है। मुझे प्रसूति का पता है, मैं माँ भी बनी हूँ। मुझे इन सारी बातों का खूब पता है और पुरोहित जी आप, गृहस्थ जीवन जो दुनियाभर के पापों को पैदा करता और पोषता है उसे श्रेष्ठ आश्रम कहते हैं? सभी आश्रमों से संचालन का इसे श्रेय देते हैं? मैं तो नादान हूँ और छोटे मुँह बड़ी बात क्या करना? किन्तु धर्म की बात तो जो पूर्वभव में मिले थे वे गुरु कह कहे थे। कितनी मधुर और उमदा! आज भी वह मृदु-मंजुल

वाणी मेरी आत्मा में गूंज रही है । अहो ......! कितनी जिन्दा और जगानेवाली वाणी!!

चील! तुझे अब अरिहंत की शरण मिली। हाँ अरिहंत जिसने काम-क्रोध-मोह-अज्ञान अंतर के शत्रु जीत लिए उन अरिहंत की शरण तुझे मिली। अब तू निराधार नहीं, तू दुःखीयारी नहीं, अब तेरे सभी दुःखों का शीघ्र ही अंत आयेगा।

तेरे मन को भटका मत। मन तो भिखारी का भिक्षापात्र है जो कभी भी नहीं भरता। तूने खूब खाया-पिया-बहुत भुगता, जीवन भी काफी जिया अब ज्ञान से आत्मा को तृप्त और संतुष्ट कर ले। ममत्व को छोड़। तेरा कुछ था ही नहीं, मात्र तूने मान रक्खा था अपना-अपना करते तू कितनी दुःखी हुई। आज अपना क्या बचा? कुछ था ही नहीं! एक ममता का जाल था, जो तूने ही बुना था। सब को छोड़, वैसे भी सबने तुझे छोड़ दिया है–तू सबको छोड़ और स्वयं को सम्हाल। स्वयं ही सब कुछ है। अपने तन-मन-बुद्धि-प्राण सब महामंत्र नवकार में केन्द्रित कर।

पुरोहितजी! आपकी बाते तो तृष्णा की बाते हैं और उन गुरुओं की तृप्ति की बातें हैं। तृष्णा से तो सदा का दुःख और तृप्ति से तुरन्त सुख मिल जाता है। यह तो कोई भी आजमाले, खुशी से। यह सब मुझे समझ में आया है। अब मुझे झूठी आशा कोई नहीं दे सकता। मेरे सिवा मुझे कोई बचा भी नहीं सकता। वो अरिहंत देव ही शरण हैं– वे सद्गुरु ही शरण हैं।

अरे बेटी! इतनी निराश क्यों होती है? तेरी मानी हुई इस दुर्घटना ने मुझे काफी कायर बना दिया है। तू मेरी सुन-मेरे साथ महल में चल, थोड़े दिनों की विश्रांति से तू सम्पूर्ण स्वस्थ हो जायेगी। तू बोलना ही बंद कर दे, किसी से नहीं बोलना-कुछ भी नहीं, बस।

नहीं माँ, मैं पूरी तरह से स्वस्थ और होश में हूँ। न कोई निराशा है, न कायरता मैंने बड़ी गहराई से सब सोचा है।

वह क्या?

यह कि आपकी और पिताजी की अनुमति लेकर मैं भृगुकच्छ जाऊँगी। वहाँ मेरे परम उपकारी गुरुओं के दर्शन वंदन स्तवन कर धन्य बनूंगी। जो संयोग बने तो मुनिसुव्रत भगवंत का अति भव्य मंदिर बनवाऊंगी। देव-गुरु-धर्म

की सेवा में जीवन बिताऊंगी और जीवन भर ब्रह्मचर्य पालूँगी। आगे देव-गुरु की कृपा हुई और धर्म आराधना आगे बढ़ी तो और कुछ कल्याणकारी कदम उठाऊँगी।

देखो, देखो, ये कैसी बहकी-बहकी बातें कर रही है–ये जो कभी नहीं की जा सकती वैसी बाते सोच रही है। राजा और रानी एक साथ बोल उठे।

कहाँ बहकी बात? वहाँ तो काफी महाभाग्यवान है। जो उत्तम जीवन जी रहे हैं। वे मेरे गुरु भी तो ऐसा जीवन ज़ीते थे। यहाँ न होने जैसा कुछ भी नहीं है। विषय-लालसा व वासना का सत्य स्वरूप जानने के बाद तो समझदार इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता। जिसके परिणाम ही भयंकर व पीड़ाकारी हो उसे कौन चाहेगा? मिठाई में जहर जानने के बाद भूखा भी उसे नहीं खायेगा। ज्ञान तो परम तृप्ति है।

राजपरिवार–पुरोहित और सारी सभा ये सब सुनकर दिङ्मूढ़ से हो गये। सब अपनी अपनी समझ के हिसाब से समझने लगे। सबने अपने अपने ढ़ंग से सुदर्शना को समझाया। परिवार ने बड़े बड़े प्रलोभन दिये। पारिवारिक सुख और परिवारहीन व्यक्तियों की पीड़ा, परेशानी तथा उनके जीवन की दुर्दशा तथा वेदना व्यथादि विस्तार से बतलाये, समझाये। जीवन के स्पन्दन-स्वप्न की बातें की और ये यौवनपुष्प योंही वीराने में मुरझा जाये–वह भी समर्थ गजा की सुन्दर राजकुमारी के लिये भाग्यहीनता की ""काष्ठा ही मानी जायेगी आदि बहुत कुछ समझाया, किन्तु सुदर्शना पर इन बातों ने कोई प्रभाव नहीं पैदा किया। लाचार रानी को कुछ भी समझ नहीं आया। उसकी आत्मा रो रही थी कि क्या यह बेटी जो बड़ी मिन्नत से पाई है, वो हम सबको छोड़कर दूर अनजान-कठोर जीवन जीने चली जायेगी। उसने बड़ी आशा से सुन्दरी की ओर देखा और बोली बहन सुन्दरी। तेरी गहरी सूझ-समझ पर हमें बड़ा आदर और विश्वास है। तेरे ही प्रताप से कुलदेवता की कृपा ने मुझे यह सुदर्शना दी है। इसको न मालूम यह क्या हो गया है? अर्थ-शून्य विचित्र और बहकी बातें करती है। मुझे तो डर लगता है कि कहीं ये पागल न हो जाये। या हमको पहचानना न छोड़ दे। जिन चीजों को पाने के लिए दुनिया सदियों से दौड़ रही हैं और जिनका जीवन में बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है उन चीजों को ये धूल और मिट्टी समझ रही है। कन्या वह भी राजकन्या के लिए शादी के

अलावा और क्या उपाय हो सकता है? यदि पागलपन रहा तो क्या होगा? फिर ये खुद मना कर रही है कि मुझे शादी नहीं करना। तुम बड़ी समझदार हो। फिर तुम्हारा बोल सुदर्शना टालेगी भी नहीं, अपनी भानजी को तुम विवाह के लिये समझाओ। मैं तुम्हारा उपकार कभी नहीं भूलूंगी।

यह सुन सुन्दरी असमंजस में पड़ गई। एक तरफ वह राजपरिवार के उपकार आभार में दबी हुई थी। बरसों से यहाँ रहकर उसने अच्छा स्थान मान पाया था। रानी की बात माननी चाहिये। तो दूसरी तरफ धर्म और सच्चाई का तकाजा था कि जिन्दगी खिलवाड़ नहीं, बुराइयों को जीतने का आह्वान है। धर्म संकट में पड़ी कुछ सोचकर बोली :-

रानी बहन! क्या बताऊँ? सारी दुनिया सुख की होड़ में पड़ी है और दुःख की बात से भी बगावत करने को तैयार है। हमारी ममता हमारे ही लोगों को सुखी बनाने और दुःख से बचाने की कोशिश में पड़ी है। दुःख का कारण ही इच्छा है। दुःख कहीं बाहर से नहीं अपने में से ही आता है। सुख या दुःख पाना अपने ही हाथ की बात है। फिर सुख और दुःख अपने अपने खयाल हैं। जो चीज आपको अच्छी लगती है वही दूसरे को बुरी भी लग सकती है। सुख की इच्छा में से ही दुःख पैदा होता है। जिसे वास्तविकता का पता लग जाता है वह जीवन को सार्थक करने के प्रयत्नों में लग जाता है। अनादि काल बीत गया, विषयों से जीवन सार्थक करने की उम्मीद-आशा में क्या-क्या कर लिया, किन्तु कोई तृप्ति का आनन्द न मिला। सब कुछ पाने पर भी जैसे जीवन खाली का खाली रह गया। इस खालीपन को भरने के लिये जीव धन, सत्ता-प्रतिष्ठा, वर-वधू का आसरा लेता है और ये सब मिलने पर कुछ देर के लिये मन नाच भी ले परन्तु सही बात तो यह है कि मन की नाच-कूद से कृतार्थ नहीं हुआ जाता।

सुन्दरी की बातें तो सुदर्शना से भी ज्यादा धारदार और पैनी थी। ऐसी बातें तो सिंहल के लोगों ने कभी कहीं सुनी ही नहीं थी। यह सुन सब हक्के बक्के रह गये। वह आगे बोली :-

सुदर्शना को सब कुछ समझ में आ गया है मैं अब इसको क्या समझाऊँगी? यही समझाना है न कि- तेरे पास जवानी है, अपार वैभव है, आमोद-प्रमोद के दुर्लभ काफी साधन है, यह सब मिला है तो मौज कर ले नहीं तो बूढ़ी

होकर यूँ ही मर जायेगी। ये जनम-मरण का विषचक्र यूँ ही चलाती रह। हमने हमारा भला नहीं किया और तू क्यों कर रही है? यही बात है ना रानी बहन? किसी को आग में झौंकने जैसी बात मैं कैसे कर सकती हूँ सुदर्शना काफी कुछ समझ चुकी है अपने हित के बारे में । अब हम उसे ऐसा रास्ता बतायें जिस पर जाने वाले किसी को आज तक सफलता नहीं मिली? यह तो गलत बात है। गलत सलाह देना तो गंभीर गुनाह है, भला वह क्यों करना चाहिये? मैं ज्यादा तो क्या कहूँ? मैं अपना ही हाल आपसे कहूँ। जो कभी भी नहीं भुलाया जा सकता है ऐसा भयंकर अनुभव मुझे हुआ है।

सभी चकित हो सुन्दरी की आप बीती सुनने को उत्सुक हुए। सुन्दरी ने भी दिल को दहलाने वाली दर्दभरी दास्तान कहनी शुरू की ........।

भारत की महिमाशाली नगरी अयोधन में समर्थ महाराजा जयवर्मा राज्य करते हैं। उनका नाम और कीर्ति आज भी भारतवर्ष में फैली हुई है।

उनके पद्मावती नाम की सुन्दर और गुणवती पट्टरानी है। दाम्पत्यजीवन के काफी कुछ वर्ष बीतने पर भी उन्हें कोई संतान न हुई। बहुत उपाय किये, ठगाये भी काफी, लेकिन मन-नयन के आनन्द स्वरूप नन्दन न हुआ।

एक बार कोई चालाक योगिनी (परिव्राजिका) से रानी की मुलाकात हो गई। बड़ी चतुर थी वह। अच्छे-अच्छे को वह ऐसी लपेट में लेती कि उसको लोग साक्षात् लक्ष्मी, सरस्वती, ब्रह्माणी या शिवा त्रिपुरसुन्दरी मानने लगते।

उसने रानी को ऐसा विश्वास दिलाया कि वह उसी को सब कुछ समझने लगी और हर तरह से उसकी सेवा भक्ति और आदर करने लगी। रानी ने एक बार अपने अन्तर की बात योगिनी से की तो वह बोली :

मैं चाहूँ तो पाताल में पहुँचू, आकाश में उड़ जाऊँ, आग को पानी बना दूँ। हवा को बाँध दूं! अरे! पहाड़ को ऊड़ाऊँ और मुर्दे को जिन्दा कर दूं। मैं जो चाहूँ सो कर सकती हूँ। रानी जी मैं आपकी इच्छा पूरी करूँगी लेकिन.....

लेकिन क्या माँ? आप अटक क्यों गयीं ?

रानी यह एक कठिन और जटिल काम है जो जोखिम से भरा है। पूरी सावधानी और गहरी साधना से ही यह संभव है। .......... पर कोई फिक्र नहीं, तुम्हारे लिए मैं सब कुछ करूँगी। कुछ चीजों की जरूरत पड़ेगी।

हाँ, हाँ, जरूर। आप जो भी कहोगी मैं सब कुछ मंगवा दूँगी। यदि आप ही ला सको तो ज्यादा अच्छा। क्योंकि तंत्रविद्या की सामग्री के विषय में महल के लोग क्या जानें ? आपको जो भी चाहिये मंगवा लीजिये। रकम जितनी भी चाहिये मुझसे ले लीजिये।

और योगिनी ने न मालूम कैसी-कैसी स्थापना की। जाति-जाति की चीजें सोना चाँदी-रत्नों के जेवर अर्पित किये। ऐसे आडंबर किये कि रानी तो बावरी हो गयी। रानी को उसने आश्वासन दिया कि अब कुछ ही वक्त में तुमको भाग्यशाली सुन्दर सुकुमार पुत्र की प्राप्ति होगी और एक दिन मौका पाकर वह पूजा में रखे बहुमूल्य वस्त्रालंकार लेकर चंपत हो गई। बड़ी तलाश की पर योगिनी का कोई पता न लगा और बेटा भी नहीं हुआ।

अंततोगत्वा रानी सारे उपाय कर चुकी और माँ बनने की सारी आशा उम्मीद भी छोड़ दी और अचानक धर्म-कर्म के योग से वह सगर्भा बनी।

उसी रात को रानी को स्वप्न में किसी दिव्यनारी ने आकर कहा कि तेरी संतान महान् और पूज्य बनेगी यह जानकर राजा-रानी बड़े प्रसन्न हुए।

समय बीता। महीने पूर्ण होने पर रानी ने अति स्वरूपवती पुत्री को जन्म दिया। सारे राज्य में खुशियाँ मनाई गईं और नाम रक्खा शियलवती ! पुष्पलता की तरह वह बढ़ती गई। विद्या और कला, रूप और गुण से उसने अत्यन्त तारीफ तो हांसिल की ही किन्तु जवानी में यह सब उभर कर उजागर हो गये। राजघरानों में ही नहीं जनसाधारण में भी वह चर्चा का विषय बन गई और तो और उसकी समानता भी रखने वाला कोई राजकुमार लाख तलाश के बावजूद भी कहीं नहीं मिला-बढ़कर तो दूर किनार रहा। बड़ी चिंता हो गई। क्या करें? कहाँ जायें। क्या इसके जैसा रूप-गुण, कलानिधान विद्वान् पुरुष होगा ही नहीं? राजा आदि चिंता में रहा करते थे।

कुछ समय बाद कुणाला नगर के महाराजा आहवमल्ल के युवराज पुत्र विजयकुमार आयोधन नगरी के महाराजा जयवर्मा के वहाँ मेहमान बनकर आये । अरे ! उनके आने के पहले ही उनकी कीर्ति आ पहुँची। नगर में जहाँ तहाँ उनकी बड़ी प्रशंसा होने लगी।

ये युवराज सज्जन, विनीत, उदार और विद्वान् तो थे ही किन्तु आकाश-गामिनी आदि अनेक विद्याएँ भी इन्होंने सिद्ध की थीं। यह बात लोग जान गये थे। ये इतने खूबसूरत थे कि लोग इनको देखते ही रह जाते, अरे! उन्हें देखने की उम्मीद में घंटे दो घंटे राह भी देख लेते।

एक वक्त की बात है। राजकुमारी शियलवती पिताजी को प्रणाम हेतु राज सभा में गई। प्रणाम कर पास में बैठी। वह बचपन से ही धीर-गंभीर, समझदार और निस्पृह थी। महलों के दुर्लभ और महंगे पदार्थों का उसे कोई खिंचाव या ज्यादा लगाव न था। वह राजसभा में बैठे राजपुरुषों को देख रही थी। उन रत्नों जैसे तेजस्वी पुरुषों में युवराज विजयकुमार बिलकुल निराले नजर आते थे। उस विलक्षण और विचक्षण व्यक्ति से शियलवती प्रभावित हुई और उसकी दृष्टि स्थिर हुई।

राजा को भी विचार आया कि इतना अच्छा, सुशील और समर्थ लड़का मेरे दोस्त के घर है और मुझे कुछ पता भी न पड़ा! यह तो उम्दा जोड़ी है विजय-शियलवती की। सुना है कि यह चतुर सज्जन तो है ही, आकाश-गामिनी आदि कई विद्या भी इसके पास हैं, देखो ना! फिर भी कितना नम्र और विनयी है! बड़े आश्चर्य की बात है सामर्थ्य के साथ नम्रता का होना। इत्यादि विचार कर राजा ने शियलवती का संबंध विजयकुमार के साथ जाहिर कर दिया। सभी बड़े खुश हुए। मिठाइयाँ बांटी गई। कुणाला नरेश आहवमल्ल को ये शुभ समाचार भेजे। दोनों राजपरिवार के घनिष्ठ संबंध थे अतः और कोई सवाल भी न था। लग्न की तिथि निश्चित करने को भी कहलवा दिया। अपनी इकलौती बेटी की शादी अनूठी और यादगार बनाने की तजवीज भी राजा करते रहे।

ऋतुराज वसंत आ चुके थे। लतागुल्म, वृक्षों ने स्वागतार्थ अद्भुत साज सजे थे। वन-उपवन ने मोहक व रंगीन दृश्य खड़े किये थे। कुंज-निकुंज-फूल-कलियाँ महक उठे थे। सुगंधी पवन ने सारा वातावरण शीतल-सुगंधी और मुग्ध कर रखा था।

आज राज परिवार के आगमन से यह पुष्प करंडक उद्यान क्रीड़ा भूमि बन चुका था। पुष्प-फलों से लदे-वृक्ष झूम रहे थे तो पक्षीगण भी मदमत्त हो

कलरव-केकारव कर रहे थे। राजपरिवार के लोग अपनी-अपनी पसंद की क्रीड़ा में पड़े।

o

राजा-रानी आदि नौका में बैठ जलविहार को चल दिये। राजकुमारी समवयस्क सखी-सहेलियों के साथ झूला झूलने लगी। विजयकुमार अपनी उम्र के कुमारों के साथ बैठकर फूलमाला, गुच्छे आदि गूंथने एवं ज्ञान-गोष्ठी तथा वार्ता-विनोद करने लगे।

खेल-कूद, वार्ता-विनोद, आदि में सब लीन थे। जहाँ तहाँ सब अपने-अपने स्थान में बैठे। कोई खान-पान में लगे थे।

इतने में विजयकुमार शियलवती के पास आया और झूला रोककर बातें करने लगा। सखी खिसक गई। कुमार ने नजदीक जाकर उसका हाथ अपने हाथ में लिया। शियलवती ने हाथ खींचा तो उसने बाहु पकड़ा। कुंवरी बोली—

मेरा हाथ छोड़ दीजिए। कोई देखेगा तो बुरा लगेगा। अरे, मुझे तो आप खींच रहे हैं? यह क्या कर रहे हैं? आज क्या हो गया है आपको? आप कैसे हो गये हैं? मुझे छोड़ दीजिये ना। जब तक शादी न हो जाय तब तक इतने करीब भी आप नहीं हो सकते। फिर सभी परिजन आदि यहीं हैं। छोड़ो, छोड़ो मुझे शर्म आ रही हैं। किन्तु विजय तो बिलकुल ही बदल गये थे। उन्होंने तो शियलवती को झूले से उतारकर अपनी ओर खींचा और एक पलक में तो उसे उठाकर उड़ गये ऊँचे आसमान की ओर। वह छोड़ो-छोड़ो चिल्लाती रही और वह उसे उठाकर समुद्र की ओर रवाना हुआ।

समुद्र मध्य में द्वीप की तरह एक हराभरा पहाड़ था। उसको विमल पर्वत कहते थे। उस पहाड़ पर वह उसे लेकर उतरा। वे पृथ्वी से काफी दूर निर्जन प्रदेश में अकेले थे। उसकी इच्छा का तो पता लग ही गया था। किन्तु यह सब इतना विचित्र था कि कुमारी बहुत घबड़ा गई थी। डर के मारे कांप भी रही थी कि इस कुलवान सज्जन ने यह क्या कर डाला और अब क्या करेगा? वह कुछ करे उससे पहले पीछे से ललकार भरी आवाज आई, रे दुष्ट! स्त्री चोर ! मेरी होने वाली पत्नी को लेकर तू कहाँ भागा। अब तू

जायगा भी कहाँ ? सच ही तुझे मौत ने याद किया है नहीं तो यह बदमाशी तुझे सूझती ही नहीं।

ललकार की दिशा में शियलवती ने देखा तो वह अचम्भे में फटी आँखों से देखती रह गयी, अवाक् और दिङ्मुख! क्योंकि यह ललकारने और पीछे आने वाला भी विजयकुमार ही था। उसकी आकृति भीषण हो गई थी और आँखें अंगारे बरसा रही थी। हाथ में खुली तलवार थी और गुस्से से होट कांप रहे थे।

पहले वाले विजयकुमार के क्रोध की अब सीमा न रही थी। इस आने वाले ने अचानक उसका सारा खेल बिगाड़ दिया था— जहाँ किसी के आने का अंदेशा भी नहीं था वहाँ ये विकराल काल की तरह आन खड़ा था। उसे नफरत व लापरवाही की नजर से देखता वह उस पर हमला करने गया और दोनों की तलवारें टकरा गई। जानलेवा लड़ाई छिड़ गयी— मरने मारने को तैयार हो गये।

चाल-ढ़ाल, रंग-रूप, शान-शक्ल, कपड़े-जेवर, अदा-अंदाज, बोली आदि से एक से ही दिखते दोनों को देखकर शियलवती बावरी बन देखने लगी। मूढ़ की तरह व बारी-बारी से दोनों की सूरत-शक्ल देखकर डरने व अपनी हालत पर रोने लगी।

अब इनकी लड़ाई भी तेजी पकड़ रही थी। उनकी तलवारे बिजली की तरह चमकती और टकराती थी। कभी आँखे दिखाते, दाँत किचकिचाते, तो कभी हुंकार की गर्जना करते, उड़ते-पड़ते दौड़ते एक दूसरे को पूरा करने की कोशिश करते वे बुरी तरह झूझ रहे थे। एक के प्रहार को दूसरा बचाता तो दूसरे की विद्या को पहला छेद देता। एक सी सूरत मूरत वालों में कौन सच्चा और कौन झूठा इसका कोई अंदाज बेचारी शियलवती न निकाल सकी। वह मन ही मन असली विजयकुमार के विजय को प्रार्थना लगी। उसे कई विचारों ने घेर रखा था। कभी झूठा-बनावटी विजयकुमार जीत जाय तो क्या क्या हो सकता है? इस विचार ने उसे बड़ा दुःखी बना दिया। वह जोर से बोल उठी नहीं ........ नहीं........ ऐसा कभी नहीं हो सकता। सत्य की ही जय होती है। वह दोनों को झूझते देखती रही। लड़ाई ने दोनों के हाल बेहाल कर रखे थे। एक तलवार छूटते ही दूसरे ने भी तलवार फैंक दी।

दोनों हाथ पैरों से लड़ने लगे। कभी नीचे कभी ऊपर। फटी आंखे-भीषण आकृति वाले ये एक दूसरों के हाथ पैर तोड़ने पर जैसे उतारू थे। आखिर इस लड़ाई में एक बुरी तरह थका और मौका मिलते ही भागा तो दूसरा भी, अरे कायर! बच के जायगा कहाँ? ठहर पाजी, अब तू नहीं बच सकता। कहता हुआ उसके पीछे भागा। दोनों आकाश में उड़कर दूर निकल गये।

बेचारी शियलवती देखती ही रह गई और वे अनंत आकाश में अदृश्य हो गये। चारों ओर पानी से घिरे उस दुर्गम पर्वत पर शियलवती अकेली रह गई। अब उसकी नजर आस-पास घूमी तो वीरान जंगल देखकर वह घबड़ा उठी। वह बालक की तरह रो पड़ी। माता-पिता तथा विजयकुमार के नाम से उसने जोरों से पुकार की किंतु उसकी आवाज की प्रतिध्वनि ही दूर-दूर तक टकरा कर वापस आई। कोई जवाब उसे नहीं मिला। खिन्न और उदास हो वह जैसे टूट गई। सोचने लगी कि—

कहाँ वह हमारा महल? कहाँ ये अनजान बियाबान समुद्र से घिरा जंगल? कहाँ परिवार? कहाँ वह उपवन और सब संगी साथी? और कहाँ ये मेरी विचित्र दशा? लोग मेरे बारे में क्या सोचेंगे? जवान लड़कों के साथ गई जवान लड़की की फजहती में कहीं कोई कसर नहीं उठा रखता है। प्रसंग की गंभीरता का अंदाज लगाते तो वह कांपने लगी। मैं क्या करूँ? कहाँ जाऊं? मेरा अब क्या होगा? इत्यादि विचित्र विचारों एवं आशंकाओं ने उसे बुरी तरह घेर लिया। वह पागल की तरह चीखने चिल्लाने व दौड़ने लगी। कहीं कोई जाने का रास्ता नहीं था और पर्वत को घेरकर समुद्र गरज रहा था।

राह देखने पर भी कोई विजयकुमार नहीं लौटा। वह खूब रोई किन्तु उसे सुनने देखने वाला कोई न था। रो रो कर उसके आँसू भी सूख गये और आवाज भी बैठ गई।

ओ भगवान्! अचानक यह क्या हो गया? मेरे लिये लोग क्या सोचते होंगे? वह कौन से पाप एक साथ उदय में आये कि मेरा सबकुछ मुझसे पलभर में छीन लिया गया !!! क्या से क्या गया? यह कौन से जुल्म की सजा है? मैंने क्या बिगाड़ा है किसी का? हाँ जरूर ही कुछ अपराध किया होगा? क्योंकि हमारे गुरु महाराज ने हमेशा कहा है कि बिना अपराध किये सजा मिल ही नहीं सकती। सच ही मैंने परभव में आपस में किसी को वियोग कराया होगा। किसी की सम्पत्ति चुराई या दबा ली होगी? या फिर किसी को

गलत सलाह दी होगी। ऐसे कोई घोर कार्य किये बिना ऐसा असह्य दंड तो नहीं मिल सका।

अति वेदना व व्यथा में भी उसे वीतराग प्रभु के वचन याद आये। समझदार मनुष्य वही है जो सुख में हर्ष या दुःख में विषाद नहीं करता और अपने आपको समत्व में स्थिर रखता है। हर हालत में धर्म की शरण में रहता है। इतना ही नहीं किन्तु आर्तध्यान के निमित्त को भी धर्मध्यान का ही निमित्त बनाता है। धर्म पर श्रद्धा रखो तो धर्म अवश्य रक्षा करता है। धर्म को फलते देर नहीं लगती। तुम धर्म पर श्रद्धा करो नहीं तो चिंता और विषाद करोगे-भयभीत बनोगे। ये दुःख से छूटने के नहीं वरन बंधन के ही उपाय हैं। यह सब सोचकर शियलवती ने हिम्मत इकट्ठी की।

भय-शोक और मोह को दूर कर स्वस्थ हुई। सोचा जो हुआ सो हुआ, अब क्या करना चाहिए? यह अहम मुद्दा है। सारी आपत्तियाँ पाप से ही आती हैं और नमस्कार महामंत्र सर्व पाप का नाश करने वाला। मैं नवकार मंत्र का ध्यान करूँ। ध्यान में वह लयलीन हो गई किन्तु थोड़ी दूर के बाद ध्यान भी टूटा। फिर वह अकेली हुई। अकेले को संगी चाहिये-साथी चाहिए। वह भी अच्छा ही चाहिये। सब से अच्छे भगवान। उनका साथ सदा का साथ। सच्चा और पक्का साथ। आत्मा का विश्राम, मन का आराम। परन्तु यहाँ कहाँ मंदिर, कहाँ भगवान्? कहाँ पूजा की पावन सुगन्धी, सामग्री और सुविधा? नहीं, सब कुछ हो सकता है। मैं अभी प्रतिमा बनाती हूँ। मेरे प्रभु को पूजूंगी। बिनती करूंगी। उनका साथ कितना मधुर, भरा-भरा और आनन्दमय होगा।

शियलवती समुद्र किनारे से रेती ले आई। एक शिलापाट पर रेती के पिंड से उसने श्री मुनिसुव्रत परमात्मा की मनोहर मूर्ति बनाई। कुछ पुष्प लाकर आंगी रचाई। वह स्तुति करते-करते भाव विभोर नाचने लगी–अपना सारा दुःख भूल गयी।

चैत्यवंदनादि सारी विधि शांति से की। भावना भाते बोली भगवान्! जिसने आपको पाया उसने सबकुछ पाया? हम लोभी लोग पाते तो कुछ नहीं, पाने की तमन्ना में मिला हुआ भी खो देते हैं।

हे तीर्थपति! जिसने आपकी उदात्तभाव से उपासना की होती है उसे कोई दुःख या क्लेश सताते ही नहीं है। आपके बताये तत्त्व ही तथ्य भूत हैं, उसके ज्ञान से सारी विडंबनाओं के कारण समझ में आ जाते हैं और प्रयत्न कर विडंबनाओं से अपना पिंड़ हमेशा के लिए छुड़ा लेता है। विश्व में वही सुखी है जिसने आपके धर्म को पाया है–उसे कभी अशांति नहीं सता सकती जिसने आपके तत्त्वों को समझा।

मैंने भी आपके मार्ग पर कदम उठाये होते तो इतनी बड़ी आफत मुझ पर कभी न आती। कैसी शर्मिन्दा होने जैसी बात कि राजकुमारी को कोई उपवन में से उठा ले गया, उड़ा ले गया। कोई पूर्व नियोजित जालसाजी होगी। न मालुम लोग क्या क्या बोलेंगे? सत्य की किसी को खबर भी नहीं है और क्यों कोई सत्य को खोजने लगा? सभी को तमाशा चाहिए? विषय का अभिलाष ही ऐसा होता है। मैंने अपना हाथ वहीं छुड़ा लिया होता तो यह अंजाम कभी न आता। ओ दयालू देव! मुझे तत्त्व का बोध दीजिए। मेरा अज्ञान दूर कीजिए। आपकी चरण सेवा से ही कल्याण हो जाता है। मुझे अपनी सेवा सदा देना–मुझे और कुछ भी नहीं चाहिये।

इत्यादि स्तुति कर वह प्रभु ध्यान में लयलीन हो दीन-दुनिया दुःख आदि सब भूल गयी।

शुद्ध भाव से की हुई उपासना–तीर्थंकर प्रभु की स्तुति-स्तवन-भोजन कभी निष्फल नहीं जाते। मन वचन-काय की एकाग्रता में तगड़ी ताकत है। श्रद्धा से ही शक्ति सक्रिय होती है। एक अरिहंत पद की आराधना भी अचिंत्य सामर्थ्य रखती है तो जहाँ पाँच परमेष्ठी की उपासना है वहाँ की महिमा कौन गा सकता है ? सारी प्रकृति तुम्हें सहायक होने को तत्पर है यदि तुम उसके योग्य हो तो। श्रद्धा, धैर्य और क्षमा बस इतना ही चाहिये।

क्रमशः

**NAHAR**
**5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,**
**Kolkata - 700 020**
**Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757**

**BOYD SMITHS PVT. LTD.**
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2230-8105/2139,

**KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA**
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

**M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY**
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2454-5650

**SURANA MOTORS PVT. LTD.**
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

**SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA**
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029,
Ph: (S) 2464-1186, (R) 2475-3133

**ASHOK KUMAR RAIDANI**
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

**IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI**
**VINAYMATI SINGHVI**
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2230 8967, (Resi) 2247 1750

**GLOBE TRAVELS**
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: (O) 2282-8181-4/8780 (R) 2249-1243

**SUVGYA BOYED**
340, Mill Road, Apt. # 1407
Etobicolse, onterio m9 Cly8
416-622-5583

**DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)**
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

**LALCHAND DHARAMCHAND**
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2230-2074/8958 (D) 2230-3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

**TARUN TEXTILES (P) LTD.**
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

**AJAY DAGA, AJAY TRADERS**
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2257-1697/7059 (Fact). 2557-1697/7059

**COMPUTER EXCHANGE**
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047

**SUNDERLAL DUGAR**
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

**ARBEITS INDIA**

8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2287-6516
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

# PSCO

**MECHANICAL ENGINEERS & FABRICATORS.**

Howrah Amta Road, Balitikuri Howrah

**M/S. POLY UDYOG**

Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2287-9277, 2287-2826
Tele Fax: 22402825

**SAROJ DUGAR**

Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

**VEEKEY ELECTRONICS**

M/s. Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2237-6255

**KRISHNA JUTE COMPANY**

Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2230-0871/9372, 3022937172
(M) 9330926774

**ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.**
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

**BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA**
M/s. D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

**MOUJIRAM PANNALAL**
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 3288-8088/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

**ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION**
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2272-1033
Fax : 91-33-22702413

**NAKODA METAL**
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2235-2076, 2235-5701

**MUSICAL FILMS (P) LTD**
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

**SAGAR MAL SURESH KUMAR**
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9331019835, Resi : 2355-9641/7196

**B.W.M.INTERNATIONAL & BIKANER WOOLLEN MILLS**
4, Srinath Katara, Main Road,
Bhadohi, Pin : 221 401 (U.P.)
Ph: (05414) 225178, 225778, Fax : (05414) 225378 (Bhdohi)
Phone : (0151) 2522404, 2225400, Fax : (0151) 2202256 (Bikaner)

**DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON**
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

**V.S. JAIN**
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

**RANJIT SINGHI**
Singhi Exports (P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

**RAJIB DOOGAR**
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

**SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR**
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

**M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.**
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

**M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.**
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 534-535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2210-3253
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं

**WITH BEST WISHES**

**DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA**
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
63A, Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

**DHANDHIA BROS**
6/1 Hara Prasad Dey lane,
Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2274-6241/3474 (O) 2269-0581

**In the Sweet Memory of my mother**
**LATE SOVABOTI DUSAJ**
Shri Manilal Dusaj
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone : 2237-5869, Mobil : 98301017091, 9830142191

**With Best Compliment from :-**
**SURANA WOOLEN PVT. LTD.**
MANUFACTURERS * IMPORTERS * EXPORTERS
67-A, Industrial Area, Rani Bazar,
Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills
22201962, 22545065 Resi
Fax : 0151 - 22201960
E-mail : suranawl@datainfosys.net

**In the memory of Badindrapat Singhji Dugar**
**GAUTAM DUGAR**
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(M) 31022126

**ARIHANT JEWELLERS**
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s. B.B. Enterprises
24 Ray Street, 2nd Floor, Kolkata - 700 00
Phone : 3258-2284/9831030188

**M/s. MUKUND JEWELLERS**
manufactures of American Diamond
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street,
Kolkata - 700 007, Ph: 2272-3876

**KAMAL SINGH KARNAWAT**
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

**RATAN LAL DUNGARIA**
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

**M/S. PARSON BROTHERS**
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 001
Phone: 2242-3870

**KESARIA & CO.**
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

With Best Wishes

**INDUSTRIAL PUMPS & MOTOR AGENCIES**

40, Strand Road, 4th Floor, R.N.3, Kolkata - 700 001

**M.L. CHOPRA & CO.**

Freight & Chartering Brokers

12-B, N. S. Road; Kolkata - 1

PH : 2230 5059 / 2230 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

**With Best Compliments From-**

**STEELUX INDIA; CIVIL CONTACTORS**

13/5 Hazi Jakaria Lane, Kolkata - 700 006

**SHIV KUMAR JAIN**

"Mineral House"

27A, Camac Street, Kolkata - 700 016

Ph: (Off) 2287-7880, 2287-8663, Res) 2287-8128, 2287-9546

**MAHENDRA TATER**

Block No. 2, 3rd Floor,

45/4A, Chakraberia Road (S)

Kolkata - 700 025

**M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.**

Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)

2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001

Ph: 2230-7162, 2231-5540, Fax : (91)(33)2220 6400

e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

**APARAJITA BOYED**
M/s. Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

**SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI**
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

**BADALIA GEMS PVT. LTD.**
**BADALIA HOUSE**
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

**CREATIVE**
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 2287-3450/3758, 2281-1690, 2290-0514/3450
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

**JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS**
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

**WITH BEST WISHES**
जो एक को जानता है, वह सबको जानता है और
जो सबको जानता है वह एक को जानता है।

**CALTRONIX**
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2230 1958/4110

**PABITRA KUMAR DOOGAR**
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-256896

**SHRI VIJAY NAHATA**
58, Walver Hallow Road
Upper Brook VileNew York - 11545
E-mail : nahata@aol.com

In the sweet memory of our mother
Late Karuna Kumari Kuthari
**Jyoti Kumar Kuthari**
12, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2230 3142 (O) 2475 0995,
**Ranjan Kumar Kuthari**
1A, Vidya Sagar Street, Kolkata - 700 009
Phone : 2350 2173, 2351 6969

**With Best Compliments from :-**
22, Strand Road
2nd Floor
Kolkata - 700 001
Phone : 22131484, Fax : 22131488

BIKASH CHHAJER
Director
**SITAL GROUP OF COMPANIES**
'Centre Point', 21, Hemanta Basu Sarani
2nd Floor, Room No. 226, Kolkata - 700 001
Phone : 2242-9265, 2210-9228, Fax : (033) 2242-9265
Mobile : 98310 22577, E-mail : finncon@vsnl.net

In the memory of my father
Late Nawaratan mull Singhvi
N. M. SINGHVI
3E, UPASANA, 48, Kali Temple Road
Kolkata - 700 026, Phone : 2466 8186 (R)

In the sweet memory of our Father
**Late Devi Singhji Kochar**
Shashipal Kochar
Katra Ahluwala
Amritsar - 143 006

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

# KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Kusum
QUALITY PRODUCT

## Our Quality Product of :

| | |
|---|---|
| Anusandhan | Bhaonagari Ghantia |
| Kolkata Nasta | Jocker |
| Badsha Khan | Lajawab |
| Picnic | Papri Ghantia |
| Raja | Rim Jhim |
| Shubham | Tinku |

**MANUFACTURED BY**

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

**KOLKATA ADDRESS:**

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3293-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

**THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED**

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

**Phone:**

Gram "GANGJUTMIL" 2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN 2226-6283
2226-6953

**Mill**

**BANSBERIA**

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Śanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

**BHANSALI**

Quality. Innovation. Reliability

**BHANSALI UDYOG PVT. LTD.**

**(Formerly: Laxman Singh Jariwala)**

**Balwant Jain** - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

शुभ कामनाओं सहित —

**मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।**

**अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।**

अनाम

# PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 2 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

**NAHAR PARK**
**45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025**
**(Near Jadu Babu's Bazar)**
**Phone: 24544696**

**Store Timings : 7.00 am to 9pm**
**All days open except Thursday**

**FREE HOME DELIVERY**

**All Prices BELOW M.R.P.**

**PARKING AVAILABLE**

# 28 water supply schemes
# 315,000 metres of pipelines
# 110,000 kilowatts of pumping stations
# 180,000 million litres of treated water
# 13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbi eared to tread).

# SPML

**Engineering Life**

## SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228. Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020 Ph: (011) 692 7091-94. Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road, Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15. Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

**With Best Compliments**

# B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

**22, Camac Street**
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

TITTHAYARA
Vol XXX. No. 6
25th September 06

Registered
No. SSRM/KOL./RMS/WB/ RNP - 071/2004-06
R.N.I. 3018/77
Registered
SSRMS Ko ... B/RNP-070/...
RNI No-3018/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

卐

**Kamal Singh Rampuria**
**Rampuria Mansions**

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225